P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

माधवी : स्त्री जीवन की त्रासदी

हबीब खान
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राज. बाँगड़ महाविद्यालय,
डीडवाना, राजस्थान

सारांश

माधवी नाटक की नाट्यानुभूति नारी जीवन की चिरकालीन विसंगतियों को उजागर करने से सम्बन्धित है। विभिन्न पुरूषों द्वारा नारी को भोगने, उसका शोषण करने और अन्ततः त्याग देने की प्रवंचना नाटककार भीष्म साहनी के संवेदनशील मस्तिष्क पर चोट करती है और उनकी यह अनुभूति इस नाटक के द्वारा व्यक्त होती है। सम्पूर्ण नाट्य विवेचन से स्पष्ट होता है कि सभी पात्र कर्त्तव्यबोध से परिचालित है और अपनी–अपनी मर्यादाओ से बंधे हुए भी। पिता दानवीर कहलाने के लिए, प्रेमी गुरू दक्षिणा चुकाकर ऋषि बनने के लिए, तीनों राजा चक्रवर्ती पुत्र पाने के लिए तथा गुरू विश्वामित्र शिष्य गालब का दंभ तोड़ने के लिए माधवी का इस्तेमाल करते हैं। कर्त्तव्य को धर्म मानकर पुरूष का साधन बनने वाली माधवी सबका कार्य सम्पन्न कर प्रेमी द्वारा अस्वीकार करने की मानसिकता, पुरूषवादी सोच का पर्दापाश करने वाली सशक्त पात्र है। निसंदेह नाटक में नारी जीवन की त्रासदी का यथार्थवादी शैली में उद्‌घाटन हुआ है। माधवी तथाकथित 'पुरूषार्थ एवं मान्यताओं के खोखलेपन' पर करारा तमाचा है। नाटक का शीर्षक विषयानुकूल तथा भावानुकूल है। महाभारत की पौराणिक कथा को आधार बनाकर नाटककार ने उसे सही दिशा में रचकर रंगमंच की दृष्टि से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

मुख्य शब्द : माधवी, भीष्म साहनी, स्त्री जीवन।

प्रस्तावना

माधवी भीष्म साहनी की नाट्यकृति है जो महाभारत के कथानक पर आधारित है। नाटक में रचनाकार ने रचनात्मक वैशिष्ट्य उस ययाति कन्या माधवी के समूचे मिथकीय परिवेश को बेंधने, नए संदर्भ में रचने और एक नारी जीवन को आधुनिक प्रासंगिक चरित्र के रुप में प्रस्तुत करने में है। पुरूष के विद्या दम्भ, असत्य भाषण, स्त्री देह की लोलुपता, स्त्री को फंसाने के लिए संजाल निर्मित करने की प्रविधि, प्रेम के नाम पर स्त्री के दैहिक सौष्ठव में संभोगीय ध्वंसावृत्ति की क्षुद्रता, झूठी प्रतिज्ञाओं द्वारा यशस्वी बनने की कामना, स्वार्थपूर्ण होने पर मानव की बदलती वृत्तियों पर साक्षीभूत दृश्य चित्रित किए हैं। पुरूषवादी समाज द्वारा विवश की गई नारी की पीड़ा को उभारा गया है। पिता के वचन और अपनी कर्तव्यनिष्ठा से विवश माघवी की पीड़ा (स्त्री जीवन की त्रासदी) जरूर है मगर इसमें अयाति (माधवी का अवैध पिता), गालब (माधवी का हठी और कायर प्रेमी), हर्यश्व (चक्रवर्ती पुत्र पाने की लालसा में विक्षिप्त अयोध्या का राजा), दिवोदास (पुत्र के लिए लालायित काशी का कामुक राजा), उशीनर पुत्र प्राप्ति के लिए लालायित वृद्ध राजा और विश्वामित्र (स्त्री की देह परीक्षा में उत्तीर्ण दंभी ऋषि) समस्त पूर्ण रूप से भागीदार है। ऋषियों द्वारा शिष्यों को दी जाने वाली शिक्षा और व्यवस्था भी सवालिया निशान के तहत है जो सिद्धान्त तो थी परन्तु व्यवहार के लायक नहीं थी।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में दूध और आंखों में पानी, नारी नियति को प्रस्तुत करने वाली मैथिली शरण गुप्त की पंक्तियाँ है जो आज स्त्री विमर्श की परिधि से बाहर का रास्ता दिखा दी गई है, परन्तु माधवी की नियति का आंकलन इन पंक्तियों को मानक बनाकर किया जा सकता है। तीन आँचलों की नारी माधवी मगर दुग्ध की धारा सूखी हुई है। इतना जरूर है कि उसकी आंखें में पानी के स्थान पर पुरूष समाज की विद्रूपताएँ और स्त्री नियति की कड़वाहटें भरी है जो उसे सन्तान धारण करने के सुख से भी डराती है और संसार की नजर में चंचल वृत्ति की नारी, जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता के स्थान पर स्थापित करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह हैं :–

1. नारी जीवन की त्रासदी का चित्रण।

2. नारी जीवन में धर्म और समाज की भूमिका।
3. मानवीय संवेदना से नारी जीवन में बदलाव की संभावना।
4. नारी जीवन एवं भविष्य दिशा निर्धारण।

नारी दशा

एक बार जुरथुस्त्र एक बुढ़िया से पूछता है बताओ, स्त्री के बारें में सच्चाई क्या है ? वह कहती है , बहुत सी सच्चाईयाँ ऐसी है जिसके बारे में चुप रह जाना ही बेहतर है। हाँ, अगर तुम औरत के पास जा रहे हो तो अपना कोड़ा साथ ने जाना मत भूलना। (नीत्शेः 'जुरथुस्त्र उवाच' से)

वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल के साहित्य से लेकर आजतक के साहित्य में नारी को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' कहकर नारी को आसमान पर बिठाया गया वहीं भक्तिकाल में ताडन की अधिकारी नर्क प्रदायिनी कहकर पाताल में ढकेल दिया गया। जिन पुराण कथाओं को आधार बनाकर भारतीय संस्कृति के गीत गाए जा रहें हैं, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ढोल बजाकर 'हम सर्वश्रेष्ठ' की आवाज बुलन्द की जा रही है, हिन्दुत्व महान का पाठ पढ़ाया जा रहा है उन्हीं कथाओं में माधवी का स्त्रीत्व बिलख–बिलख कर विलाप कर रहा है उसकी बिलख को पिता, प्रेमी, राजा और गुरू किसी ने महसूस नहीं किया।

दार्शनिक अरस्तू ने स्त्री की परिभाषा यह कहकर दी, 'कुछ गुणवताओं की कमियों के कारण ही औरत बनती है। हमें स्त्री के स्वभाव से यह समझना चाहिए कि प्राकृतिक रूप से कुछ कमियॉ है। वह एक प्रांसगिक जीव है। वह आदम की एक अतिरिक्त हड्डी से निर्मित है।'[1] सामन्तवादी समाज में स्त्री की दशा इससे अलग नहीं है। हर विजेता ने शत्रु राज्य की सम्पति के साथ–2 पशुओं, गुलामों और स्त्रियों को भी लूटा है क्योंकि उनकी नजर में मूलतः वह भी सम्पति ही है। राजेन्द्र यादव ने लिखा है, 'सामन्ती समाज में स्त्री के केवल तीन नाम है– पत्नी , रखैल और वेश्या। इसके अलावा वह किसी सम्बंध को स्वीकार नहीं करता।..... लोहिया ने कृष्ण और द्रोपदी के बीच मैत्री सम्बन्ध को आदर्श, बराबरी का सम्बन्ध बताया जरूर है लेकिन आगे वह कहीं दिखाई नहीं देता।'[2] अंतरिक्ष तक की यात्रा तय करने वाली स्त्री की स्थिति में आज भी अपेक्षित सुधार नहीं हो सका है। राजेन्द्र यादव ने लिखा है, 'स्त्री अपनी बौद्धिक एवं अन्य उपलब्धियों के लिए चाहे जितनी हायतौबा मचाती रहे पुरूष की जिद है कि साम, दाम, दण्ड, भेद से वह उसे कमर, कूल्हे नितम्ब छातियों से ऊपर नहीं उठने देगा।

जब तक उसके पास लुभावनी देह है तभी तक उसकी विश्वव्यापी प्रतिष्ठा है।'[3] (नारी तुम केवल श्रद्धा हो, पृष्ठ 28) आज भी बहुत से समाजों में स्त्री की स्थिति दयनीय है। शिक्षित होने पर भी पुरूषवादी सोच में सुधार नहीं हो सका है। अरविन्द जैन ने सही ही लिखा है, 'मुझसे शादी किया है तो पत्नी होने का धर्म निभाओ, आओ मेरी सम्पति के वारिसों को जन्म दो, पुत्र जन्मोगी तो भाग्यशाली और लक्ष्मी कहलाओगी, छत पर चढ़कर ननद थाली बजायेगी और सारे शहर में लड्डू बांटे जायेंगे। पर याद रखना बेटियां जन्मी तो कुलक्षणी और अभागी मानी जायेगी क्योंकि छोरियां होने की खुशियाँ सिर्फ वेश्याओं के यहाँ मनाई जाती है।'[4]

इस्लाम में इस इस तरीके को सख्ती से मना किया गया है कि बच्चों के जन्म पर खुशी मनायी जाये और लड़की की खबर पर अफसोस किया जाये। पवित्र कुरआन ने आदमी की मानसिकता का क्या नक्शा खींचा गया है, 'जब इन में से किसी को बेटी के जन्म की खुशखबरी दी जाती है तो इनके चेहरे पर स्याही आ जाती है और वह बस खून का सा घूंट पीकर रह जाता है।'[5] शिक्षा के साथ सुधार आ रहा है लेकिन सामाजिक एवं मानसिक स्तर पर अभी भी सुधार अपेक्षित है। सामाजिक कुरीतियों के कारण भी बच्चों का जन्म माँ–बाप पर भार बना हुआ है। माधवी नाटक में उस नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने को तिल–तिल जलाकर दूसरों के काम आती है। विश्वामित्र का शिष्य गालब भले ही बारह विद्याओं में पारंगत हो, परन्तु रूढ़ियों के प्रति मोह, आत्मदंभ, और हठपूर्ण लोभ के वशीभूत होने से नारी की निश्चल भाषा का वाचन नहीं कर सकता। अपने नाम को चरितार्थ करता 'निचोड़ने वाला' ही बना रहता है। स्त्री चाहे जितनी भी शक्तिशाली , गुणवती कन्या क्यों न हो, माता–पिता विवश होकर अपनी बेटी को ऐसे हाथों में सौंप देते है जो उसका ठीक ढंग से ख्याल भी नहीं रख सके। राजा ययाति भी लगभग ऐसा ही करता है। यहॉ माधवी अपनी भावनाओं में खोई यंत्र नारी जरूर बन गई है। परन्तु अपने संवाद से स्त्री विमर्श की जो जमीन तैयार की है वह स्त्री की दशा सुधार के लिए प्रकाश स्तम्भ और परखने के लिए मील का पत्थर है। कांटों के बीच गुलाब की तरह स्त्री नियति के चुभते यथार्थों को उभारने का प्रामाणिक प्रयास है।

कथानक विमर्श

माधवी नाटक महाभारत की कथा पर आधारित है जिस की कथावस्तु 5000 वर्ष पुरानी हैं। माधवी महाभारत के प्रसिद्ध राजा यथाति की एक मात्र पुत्री है। नाटक का सम्पूर्ण कथानक माधवी के इर्द–गिर्द घूमता है। माधवी दिव्य गुणों से विभूषित है जिसे चिर–कौमार्य और चक्रवर्ती पुत्र जन्म देने का वरदान प्राप्त है। माधवी का यही वरदान उसकी जिन्दगी का अभिशाप बन जाता है। ऋषि विश्वामित्र का शिष्य गालब जब शिक्षा समाप्ति पर अपने गुरू को दक्षिणा देने की हठ करता है तो क्रुद्ध होकर विश्वामित्र उसे 800 अश्वमेघी घोड़ों की माँग करते है। गालब दर–दर भटकता हुआ जब राजा यथाति के यहाँ पहुँचता है तो राजा राजपाट छोड़कर आश्रम में निवास करने चला जाता है। राजा इस कार्य में अपनी असमर्थता जाहिर करते है। गालव उन्हें उनकी दानवीरता की याद दिलाता है। यश लिप्सा का भूखा राजा अपनी पुत्री माधवी को दान में दे देता है। माधवी पिता का आदेश मानकर बिना प्रश्न किए गालब के साथ हो जाती है और अपनी कर्तव्यनिष्ठता का परिचय देती है। पिता के इस निर्णय से पुत्री को कितना कष्ट हुआ बहुत ही संवेदनशील बिन्दु है। माधवी कहती है, 'आज माँ होती तो क्या वह भी मुझे इस तरह दान में दे देती।'[6] गालब ययाति से माधवी के जीवन का रहस्य जानकर उसपर अपने स्वार्थी सपनों का महल खड़ा करता है। यहां से ही

माधवी के जीवन के दुःखों की शुरूआत होती है। इनसे अनजान माधवी गालब से प्यार करने लग जाती है। राजा हर्यश्व के दरबार में जब ज्योतिषी द्वारा माधवी के गुणों का शारीरिक परीक्षण किया जाता है तब वह आहत होकर गालब से कहती है, 'मेरे साथ किस जन्म का बैर चुकाने आये हो ? मैंने ऐसे कौन सा पाप किया था, जिसका मुझे ये फल मिल रहा है।'[7] सहज ही नारी की विवशता समझी जा सकती है। कथा में मोड़ तब पैदा होता है जब वह अयोध्या के राजा हर्यश्व को यहाँ एक चक्रवर्ती पुत्र को जन्म न दे दे, तब तक उसे वहीं रहना है। माधवी का यह निर्णय व्यक्तिगत स्तर पर विवशतापूर्ण हो सकता है जब वह गालब के उदेश्य की पूर्ति हेतु साधन बनना स्वीकार करती है लेकिन अपने भीतर के प्रेम को मारकर विवशता मे रहना मानवीय स्तर पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है। जीवन की त्रासदी का तांडव उस समय खड़ा होता हैं। जब वह नवजात शिशु जन्म देकर, शिशु छोड़कर गालब के पास वापस आ जाती है ताकि वह अगले दौ सौ घोड़ों की व्यवस्था दूसरे राजा के यहाँ रनिवास में रहकर उसे भी एक चक्रवर्ती पुत्र प्रदान कर प्राप्त कर सके। माधवी एक ऐसा पात्र है जिसे अपनी साधनगत स्थिति के प्रति रोष तो है परन्तु प्रतिरोध की शक्ति नहीं है। वह अपने को स्थिति के प्रति समर्पित कर देती है। वह जानती है कि दान मे दी गयी वस्तु का अपना कुछ नहीं होता है। यह माधवी के जीवन की कैसी विडम्बना है कि उसे अश्वमेघी घोड़ों और पुत्रों में से किसी एक का चयन करना है। जब गालब कहता है कि अयोध्या नरेश को पुत्र देकर अब हम स्वतंत्र है। माधवी का कथन विचारणीय है, 'स्वतंत्र? कैसी स्वतंत्रता गालब ? उस दीवार के पीछे मेरा नन्हा बालक मुँह खोले मेरा स्तन ढूंढ़ रहा है और तुम कहते हो मैं स्वतंत्र हूँ। क्या गालब तुम मुझे सचमुच स्वंतत्र समझते हो। जो माँ अपने बच्चें को छाती से लगा पाये वही स्वतंत्र होती है।[8]

सचमुच स्त्री स्वतंत्रता का मौलिक प्रश्न है कि नारी जब तक स्वतंत्र नहीं है जब तक वह स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सके। राजेन्द्र यादव ने सही लिखा है 'आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री की सम्पत्ति पर या वेतन पर माता–पिता का कब्जा होता है पति का या ससुराल का। अपने मन से वह जब खर्च करती हैं तो एक अपराध बोध अपने मन में रहता है... इतिहास उनके होते हैं जो अपने फैसले स्वयं ले सकते है। स्त्री पर किये जाने वाले अत्याचार या सारे श्रृंगार शुरू से उसकी देह को लेकर है। पुराने शास्त्रों में नख–शिख से लेकर स्त्रियों के सारे वर्गीकरण उसकी देह तक केन्द्रित है। स्त्री के मन को समझने के लिए जो बारह मासे है वह भी पुरूष की संयोग–वियोग की गीत मालाएँ है। अपनी देह मे जकडी और वहीं तक सीमित कर दी गई है। औरत की मुक्ति यात्रा सिर्फ और सिर्फ उसकी देह से शुरू होती है।'[9] लेकिन देह की मुक्ति उसे बाजार का खिलौना भी बना सकती है। दिमागी मुक्ति के साथ ही देह की मुक्ति कारगर सिद्ध हो सकती हैं। देह की मुक्ति या इस्तेमाल का विवेक उसे अर्जित होना चाहिए।

सामाजिक परिवर्तन और विद्रोह सबसे पहले दिमाग के स्तर पर घटित होते है। स्त्री पुरूष एक दूसरे को समझे, एक दूसरे के प्रति समान, सम्मान और समझदारी से काम लेते हुए जीवन यापन करे तो कुछ हद तक स्वतंत्र जीवन जी सकते है। पवित्र कुरआन का आदेश है 'वह तुम्हारे लिए लिबास है और तुम उनके लिए लिबास हो।'[10] मगर गालब के वहाँ बराबरी का भाव कहाँ? वहाँ तो स्वार्थ साधने की भूख लगी थी। गालब माधवी से कहता है सन्तान पैदा कर तुम इतनी दुर्बल हो जाओगी, इसलिए शायद स्त्रियां जोखिम का काम नहीं कर सकती है। किसी बड़े काम का दायित्त्व वह नहीं कर सकती। नारी स्वयं को कष्ट मे डालकर सर्वस्व समर्पित कर उद्देश्य के प्रति गंभीर बनी रहती है और वह भी निस्वार्थ भाव से। नारी को कमजोर आंकने वाला पुरूष गालब शायद इस बात को समझ नहीं पाता है कि उस निर्बला के बिना उसका उद्देश्य पूर्ण होना संभव नहीं है। माधवी विचार करती है, 'यदि यह दुर्बल नारी बीच से निकल जाये, गालब तो क्या होगा।'[11] माधवी का यह कहना पुरूषवादी वर्चस्व को चुनौती है। नाटक की मूल सवेदंना को खोलकर रख देता है। स्वार्थी पुरूषवादी मानसिकता उजागर होती है। माधवी के यौवन की आहुति के बल पर असंभव गुरूदक्षिणा जुटाकर गालब ऋषि की उपाधि पाता है। दूसरी ओर राजा दिवोदास की मानसिकता भी स्वार्थी और सामन्तवादी है। वह कहता है, 'पुत्र न हुआ और अठारवीं बेटी हुई तो हम तुम दोनों को काल कोठरी में बंद कर देंगे।'[12] पिता जिसे चाहे सौंप दे। ले जाने वाला उसके साथ जो चाहे व्यवहार करे तो भी फिर वह क्यों रिस्तों और सम्बंधों को मानती है ? जब वह किसी के लिए महत्वपूर्ण नहीं है तो उसके लिए वह क्यों महत्वपूर्ण है ? इसका जवाब तो आने वाले समय के गर्भ में है। गालब कहता है, 'पर जो स्त्री मेरे गुरू के आश्रम में रह चुकी हो उसे मैं अपनी पत्नी कैसे मान सकता हूँ।'[13] वास्तविकता यह है कि गालब जिस माधवी को चाहता था वह रूप सौन्दर्य की धनी युवती थी पर अब वह जो सामने है वह न युवती है और न ही आकर्षक। माधवी स्पष्ट गालब को जबाब देती है,'तुम सीधी बात क्यों नहीं करते, दिल में तुम्हारे वासनाएँ कुलबुलाने लगी है ऊपर से तुम आदर्श और मर्यादाओं की बात करते हो।'[14]

गालब की मानसिकता से मिलता एक नक्शा रामचन्द्र औझा ने खींचा है, 'वेश्याएं अपनी आर्थिक मजबूरियों के कारण वेश्याएं बनी हैं या स्वेच्छा से। बल्कि प्रश्न यह कि बहुयौन सम्बन्धों से ऐसे कौन से शारीरिक या मानसिक रसायन बदलते हैं जिनके कारण उन्हें अपवित्र और हीन समझा जायें ? जीवन जीने के तरीके के आधार पर . . . यौन अराजकता के रुप में परिभाषित करने वाले विचार यथास्थितिवादी है।'[15] अपनी प्रकृति के अनुसार माधवी गालब को अपने बन्धन से मुक्त करते हुए, जवान होने के लिए सक्षम होने के बावजूद अनुष्ठान नहीं करती है। अपनी त्रासदी पर गालब से कहती है, मैं तो वह मां हूँ जिसकी गोद भरती गई और खाली होती गई । सन्तान धारण करने का अर्थ है अपने बच्चो को खो देना। माधवी को गालब का आत्मकेन्द्रित और स्वार्थपूर्ण व्यवहार स्वीकार नहीं है। माधवी का इन्कार व्यापक सदंर्भ में स्त्री के चुनाव और निर्णय से उसकी स्थिति को बेहतर बनाने का अर्थ निर्मित करता है। प्रेम के जिस आँचल में तपकर

माधवी निकली है क्या उससे कठिन कोई परीक्षा हो सकती है? वसुमना, प्रतर्दन, शिवि और अष्टक जैसे चक्रवर्ती पुत्रों को जन्म देने वाली माता अपने जीवन मे खालीपन, अतृप्त मातृत्व सहकर जब यह कहें तुम जाओ गालब, गुरूजन तुम्हारी राह देख रहे हैं। युगों–युगों तक तुम्हें मेरा आशीर्वाद मिलता रहें मैंने अपनी भूमिका निभा दी।[16] यह निस्वार्थ भाव की पराकाष्ठा है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी का इस नाटक के सम्बन्ध में मानना है, 'नाटक का कुछ भाग प्रभावशाली बन पाए है और मैं किसी हद तक आश्वस्त हूँ।'[17] विभिन्न पुरूषों द्वारा एक नारी को भोगने उसका शोषण करनें और अन्ततः त्याग देने की प्रवर्चना मानव को कालजयी कृति लिखने को मजबूर करती हैं। भवदेय पाडेंय ने लिखा, 'भीष्म साहनी के माधवी नाटक में नारी मुक्ति की यात्रा के लिए हरी झंडी दिखलाई है।'[18] आज के स्त्री विमर्श के युग मे माधवी ने गालबों, ययातियों तथा विश्वामित्रों के चेहरो के मुखोटो को बेनकाब किया है। माधवी जमीन तोड़ने वाली कृति है जिसमें भीष्म साहनी ने मानवीय संवेदनाओं का सृजन, औचित्य और उसकी ताकत को परवान चढ़ाने वाले आम आदमी के संघर्ष का सृजन है। माधवी द्वारा नाटककार ने आदर्शों, मर्यादाओं, घिसे पिटे मूल्यों, कृतज्ञता, मुक्ति, प्रतिज्ञापूर्ति, वचनबद्धता, संस्कारशीलता गुरू दक्षिणा के नाम पर ऋषिनिष्ठा, आस्था जैसे सवालों को उठाकर नाटक को प्रासंगिक बना दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सीमोन दी बोऊवार, स्त्री उपेक्षिता हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2004 (पृष्ठ–23)*
2. *राजेन्द्र यादव आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2006 (पृष्ठ–19)*
3. *वही, (पृष्ठ–28)*
4. *अरविन्द जैन, न्यायक्षेत्रे–अन्यायक्षेत्रे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2005 (पृष्ठ20)*
5. *पवित्र कुरआन, अध्याय 14 (सूरह नहल 58)*
6. *भीष्म साहनी, माधवी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 (पृष्ठ–19)*
7. *वही, (पृष्ठ–32)*
8. *वही, (पृष्ठ–54)*
9. *कथाक्रम (सम्पादक शैलेन्द्र सागर) जुलाई सितम्बर 2007(पृष्ठ 8)*
10. *पवित्र कुरआन, अध्याय 2 (सूरह बकर 187)*
11. *भीष्म साहनी, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 (पृष्ठ–55)*
12. *वही, (पृष्ठ–64)*
13. *वही, (पृष्ठ–93)*
14. *वही, (पृष्ठ–93)*
    हंस (राजेन्द्र यादव) फरवरी, 2003 (पृष्ठ–55)
15. *भीष्म साहनी, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 (पृष्ठ 96)*
16. *भीष्म साहनी, आज के अतीत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 (पृष्ठ–239)*
17. *आलोचना अंक 17–18 (स. नामवर सिंह) अप्रैल–सितम्बर, 2004 (पृष्ठ 200)*